01 JAN 2022

जागरण

शिक्षा की लौ जगा रहे हैं खाकी वर्दी वाले मास्टर जी

सौमित्र मिश्रा • नई दिल्ली

पुलिस को लेकर आमजन में अक्सर अच्छी सोच नहीं रहती है, लेकिन दिल्ली पुलिस में तैनात सिपाही धान सिंह जैसे जवान इस सोच को बदलने की दिशा में शिद्दत से काम कर रहे है। कानून व्यवस्था तो दुरुस्त रखने के साथ ही शिक्षा के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में जुटे हैं, ताकि ये गरीब बच्चे अपराध के दलदल में न जाकर देश के विकास में अहम स्थान दे सकें। धान सिंह लाल किला पुलिस चौकी में सिपाही के पद पर तैनात हैं। यहां उनकी नियुक्ति लगभग 10 सालों से हैं। यहां पर ड्यूटी के दौरान उन्हें ऐसे बाल अपराधी भी मिलते थे जो कई तरह के अपराधों में लिप्त थे। साथ ही कई ऐसे बच्चे तो जो कूड़ा बीनते थे या चाय बेचते थे। इन सभी बच्चों के जीवन में कोई दिशा नहीं थी। ये बच्चे अमूमन झुग्गी-झोपड़ी और गरीब घरों से थे। धान सिंह ने इस तरह के बच्चों को अपराध की दुनिया में आगे जाने से बचाने और उनके जीवन को एक दिशा देने के लिए



लाल किला परिसर स्थित मंदिर में गरीब व अनाथ बच्चों को पढ़ाते सिपाही धान सिंह • संजय

शिक्षा की लौ जलाने का काम किया है। वह लाल किला की पार्किंग स्थित मंदिर में पाठशाला लगाते हैं। उनको ये पाठशाला धान सिंह की पाठशाला के नाम से मशहूर है। पाठशाला में पढ़ रहे बच्चे उन्हें प्यार से खाकी वर्दी वाले मास्टर जी कहकर पुकारते हैं। उनकी पाठशाला से अब तक 200 से अधिक बच्चे शिक्षित हो चुके हैं। मौजूदा समय में उनकी इस पाठशाला में 50 से अधिक बच्चे हैं।

चार से लेकर 16 साल तक के बच्चों को कर रहे शिक्षित : धान सिंह के मुताबिक उन्होंने इस पाठशाला की शुरुआत साल 2016 में चार बच्चों के साथ की थी। धीरे-धीरे यह संख्या बढ़ने लगी। इस पाठशाला में वह चार साल से लेकर 16 साल तक की उम्र के बच्चों को पढ़ाते हैं। पाठशाला को उन्होंने तीन भागों में बांटा है। पहले भाग में वैसे बच्चे हैं जिन्हें पढ़ना-लिखना बिल्कुल नहीं आता है। दूसरे भाग में वैसे बच्चे हैं जिन्हें थोड़ा-बहुत पढ़ना-लिखना आता है, ऐसे बच्चों को वह हर विषय का गहराई से ज्ञान देते हैं। वहीं, आखिरी भाग में वैसे बच्चे हैं जिन्हें वह स्कूलों में दाखिला लेने के पढ़ाते हैं, ताकि वह अच्छे स्कूलों की परीक्षा पास कर दाखिला ले सकें। वह इन बच्चों को किताबी ज्ञान देने के अलावा नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाकर संस्कारवान भी बना रहे हैं। वह बच्चों की किताब, कापी, पेंसिल और खाने पी व्यवस्था पी खुद ही करते हैं। उनके मुताबिक उनकी इस पाठशाला के बच्चों को लिए डीसीपी सागर सिंह कलसी से खेल शिक्षक की व्यवस्था की है जो हर रविवार खेल की कक्षा लेता है। ऐसे में ये बच्चे सातों दिन इस पाठशाला में आते हैं।

कोरोना काल में भी जारी रखी पढ़ाई : कोरोना के दौरान ज्यादातर लोग अपने गृह राज्य को लौट गए थे, लेकिन धान सिंह के मुताबिक उन्होंने एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा इन बच्चों के घरों में ही खाना और घरेलू उपयोग की सभी वस्तुएं पहुंचवाई और उनके माता-पिता से गृह राज्य न लौटने की गुजारिश की। इससे बच्चों की पढ़ाई बीच में ही छूटने से बच गई। सभी बच्चे लाकडाउन के दौरान मंदिर में आकर मुंह पर मास्क लगाकर और शारीरिक दूरी का पालन करते हुए पढ़ते थे। उन्होंने अपनी इस पाठशाला में आनलाइन पढ़ाने की व्यवस्था भी कर रखी है।

Scanned with CamScanner